संस्कृत साहित्य में काव्यशास्त्र एवं काव्य-तत्त्वों की अन्योन्याश्रितता

Preeti, Research Scholar, Department of Sanskrit, Dr. Bhimrao Ambedker University, Agra

सारांश

संस्कृत साहित्य भारतीय ज्ञान, दर्शन एवं साहित्यिक परंपरा की अमूल्य निधि है। इसमें काव्यशास्त्र एवं काव्य-तत्त्वों का विशेष स्थान है, जो काव्य की रचना, संरचना, सौंदर्य एवं भावात्मक अभिव्यक्ति को समृद्ध बनाते हैं। काव्यशास्त्र काव्य के स्वरूप, उद्देश्य, गुण, दोष, अलंकार, रस, ध्वनि, रीति, वक्रोक्ति एवं औचित्य आदि का सैद्धांतिक विवेचन प्रस्तुत करता है, जबकि काव्य-तत्त्व इन सिद्धांतों को व्यावहारिक एवं कलात्मक रूप प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य संस्कृत साहित्य में काव्यशास्त्र एवं काव्य-तत्त्वों की अन्योन्याश्रितता का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। संस्कृत के प्रमुख आचार्यों जैसे भरतमुनि, भामह, दण्डी, वामन, आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, कुन्तक एवं मम्मट ने अपने ग्रंथों के माध्यम से काव्य के विभिन्न सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। इन आचार्यों के विचारों में काव्य की आत्मा, सौंदर्य, भावाभिव्यक्ति तथा रस निष्पत्ति को लेकर विविध दृष्टिकोण प्राप्त होते हैं। इस अध्ययन में रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति एवं औचित्य जैसे प्रमुख काव्य-तत्त्वों का विवेचन करते हुए संस्कृत काव्य की रचनात्मक प्रक्रिया में उनकी भूमिका को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। साथ ही, यह विश्लेषण किया गया है कि काव्यशास्त्रीय सिद्धांत किस प्रकार काव्य की कलात्मकता, प्रभावशीलता एवं सौंदर्यबोध को निर्धारित करते हैं तथा काव्य-रचनाएँ किस प्रकार इन सिद्धांतों को व्यावहारिक आधार प्रदान करती हैं। कालिदास, भारवि, माघ एवं भवभूति जैसे महान कवियों की साहित्यिक रचनाओं के संदर्भ में काव्यशास्त्रीय अवधारणाओं की प्रासंगिकता को भी समझने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य यह स्थापित करना है कि काव्यशास्त्र एवं काव्य-तत्त्व एक-दूसरे से पृथक नहीं हैं, बल्कि दोनों का संबंध परस्पर पूरक एवं अन्योन्याश्रित है। निष्कर्षतः, संस्कृत साहित्य की समृद्धि एवं सौंदर्यात्मक विशिष्टता को समझने के लिए काव्यशास्त्र और काव्य-तत्त्वों का समन्वित अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY